بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 27 दिसम्बर **2024,** स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

युद्धों तथा सिराया (सैन्य अभियानों) के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-27.12.24

محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب۔143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आज भी कुछ लड़ाइयों और सैन्य अभियानों का वर्णन करूंगा। इतिहास में एक युद्ध अभियान का वर्णन मिलता है जो सिर्या ज़ैद बिन हारसा रज़ी. कहलाता है। यह सिरया जमादिल आख़िर 6 हिजरी को बनू जज़ाम के एक हसमा नामक नगर में हुआ जो मदीने से आठ रातों की यात्रा पर स्थित था।

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ी. फ़रमाते हैं कि इस सिर्ये की तिथियों के विषय में एक शंका है, जिसका बयान करना अनिवार्य है। इब्ने सअद तथा इनके अनुकरण में अन्य जीवन परिचय विद्वानों ने इस सिर्ये की तिथि जमादिल आख़िर 6 हिजरी लिखी है और इसी की पुष्टि की है, परन्तु अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने ज़ादुल मआद में लिखा है कि यह सिरया 7 हिजरी में हुदैबियः की संधि के बाद हुआ था। इस विनीत के विचार में एक कारण ऐसा है जिसे अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने अनदेखा कर दिया है, और वह यह है कि सम्भवतः क़ैसर से भेंट करने के लिए दिह्या शाम देश में दो बार गए होंगे, अर्थात पहली बार वे सुलह हुदैबियः से पहले स्वंम व्यापार के उद्देश्य से गए हों और कैसर से भी मिले हों, और दूसरी बार सुलह हुदैबियः के बाद आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का पत्र लेकर गए होंगे। इस परिणाम का समर्थन इस प्रकार भी होता है

कि इब्ने इस्हाक़ ने लिखा है कि इस यात्रा में दिह्या के पास व्यापारिक सामान था और सुलह हुदैबियः के बाद वाली यात्रा में प्रत्यक्षतः व्यापारिक सामान का सम्बन्ध दिखाई नहीं पड़ता। यह भी हो सकता है कि दिह्या की यह यात्रा केवल व्यापारिक दृष्टि से हो और इब्ने सअद के रावी ने इसकी दूसरी यात्रा के साथ इस यात्रा को भूल से उल्लेख करके कैसर की मुलाक़ात और एकांत के वर्णन को केवल अनुमान के आधार पर शामिल कर लिया हो, अल्लाह ही सही जनता है।

फिर सिरया अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ी. का वर्णन मिलता है। यह सिरया शअबान 6 हिजरी को दूमातुल जन्दल की ओर हुआ। इसके विस्तारण में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. में यूं लिखा है कि इस सिर्ये की तय्यारी तथा रवानगी के सम्बन्ध में इब्ने इसहाक़ ने अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ी. से यह अदभुत रिवायत ली है कि एक बार जब हम कुछ लोग जिनमें हज़रत अबू बकर रज़ी. और उमर रज़ी. और उसमान रज़ी. और अली रज़ी. और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ी. भी शामिल थे। आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में बैठे थे कि एक अंसारी नौजवान ने हाज़िर होकर आप स. से पूछा कि या रसूलुल्लाह! मोमिनों में सर्वश्रेष्ठ कौन है? आप स. ने फ़रमाया- वह जो मौत को अधिक याद रखता है और इसके लिए समय से पहले ही तय्यारी करता है। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि तय्यारी क्या है? कि अल्लाह तआला के अप्रसन्न होने का भय हो, उसका हक़ अदा किया जाए और उसके आदेशानुसार आज्ञा पालन किया जाए, यह है मौत की तय्यारी। इस पर वह अंसारी नौजवान चुप हो गया और आप स. ने हमारी ओर ध्यान देते हुए फ़रमाया- ऐ महाजिरों के दल! पाँच बुराइयां ऐसी हैं जिनके विषय में मैं ख़ुदा की शरण मांगता हूँ कि वे कभी मेरी उम्मत में पैदा हों, क्यूँकि वे जिस क़ौम में घटित होती हैं उसका विनाश करके छोड़ती हैं।

पहली यह कि कभी किसी क़ौम में अशलीलता एवं व्यभिचार नहीं फैली, इस सीमा तक कि वे उसे खुल्लम खुल्ला करने लग जाएँ और उसके परिणाम में ऐसी बीमारियाँ तथा बलाएँ न प्रकट होना शुरू हो गई हों जो उनसे पहले लोगों में नहीं थीं। हुज़ूर ए अनवर ने फ़रमाया कि आजकल दुनिया में तो यह हम सामान्यतः देखते हैं, आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इससे पनाह माँगी। मुसलमानों को इस पर विशेष रूप से विचार करना चाहिए। दूसरे कभी किसी क़ौम में नाप तोल में बेइमानी करने की बुराई पैदा नहीं हुई कि इसके परिणाम में उस क़ौम पर भुखमरी और कष्ट और जटिलताएँ और शासन प्रशासन की ओर से अत्याचार की कठिनाइयाँ प्रकट न हुई हों। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया- इस पर भी बड़े विचार की आवश्यकता है, मुसलमानों में भी बेइमानी अत्यधिक पैदा हो चुकी है। काश! वे इसको समझें और अहमदियों को भी विशेष रूप से इस ओर ध्यान देना चाहिए। तीसरे कभी किसी क़ौम ने ज़कात और सदकों की अदायगी में सुस्ती एवं ग़फ़लत नहीं दिखाई कि उसके परिणाम स्वरूप उन पर बारिशों की कमी न आ गई हो, यहाँ तक कि यदि ख़ुदा को अपने द्वारा पैदा किए हुए पशुओं की चिन्ता न होती तो ऐसी क़ौम पर वर्षा पूर्णतः बंद हो जाती। हुज़ूर ए अनवर ने फ़रमाया- यह भी अल्लाह तआला के प्रकोप की निशानी है, इससे भी पनाह मंगनी चाहिए।

आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- पनाह मांगो, मैं भी पनाह मांगता हूँ।

चौथे यह कि कभी किसी क़ौम ने ख़ुदा और उसके रसूल स. के एहद को नहीं तोड़ा कि इन पर कोई अन्य क़ौम इनके दुश्मनों में से इनके सिर पर न बिठा दी गई हो, जो इनके अधिकारों पर क़बज़ा करने लग जाए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया- आजकल मुसलमानों की जो हालत है, उससे ज़ाहिर है कि ये एहद को तोड़ने वाले हैं। अल्लाह तआला रहम करे और इनको समझ दे।

पांचवें यह कि कभी किसी क़ौम के विद्वान मौलवियों ने फ़तवे दे दे कर शरीअत को अपने स्वार्थ के अनुसार नहीं बिगाड़ना चाहा कि उनमें परस्पर लड़ाई और झगड़ों का क्रम शुरू न हो गया हो। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया- यह भी अब मुसलमानों में साम्प्रदायिकता सामान्य रूप से दिखाई देती है। जिन चीज़ों से आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पनाह मांगी थी, वही हमें आजकल मुसलमानों में नज़र आ रही है, अल्लाह तआला रहम करे। आँहज़रत स. की यह स्वर्णिम शिक्षा क़ौमों के विकास और पतन पर अति शोभनीय टिप्पणी है और यदि मुसलमान चाहें तो इनके लिए वर्तमान युग में भी यह एक सुन्दर शिक्षा है। काश! मुसलमान इस पर विचार करें।

फिर सिरया हज़रत अली इब्ने अबी तालिब रज़ी. है जो फ़िदक नामक स्थान की ओर गया, उसका वर्णन मिलता है। यह सिरया शअबान 6 हिजरी को हुआ। रसूलुल्लाह स. ने हज़रत अली रज़ी. को सौ आदमियों के साथ फ़िदक में बनू असद बकर की ओर भेजा। सात हिजरी में खैबर की लड़ाई के अवसर पर यह इलाक़ा युद्ध के बिना ही विजय हुआ था।

फिर सिरया हज़रत अबू बकर रज़ी. का वर्णन मिलता है, जो बनू फज़ारह की ओर था। यह सिरया 6 हिजरी में हुआ। बनू फज़ारह नजद नामक स्थान पर क़ुरा की घाटी में आबाद थे। अलतबक़ातुल कुबरा तथा सीरत इब्ने हिश्शाम में लिखा है कि यह सिरया हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ी. के नेत्रित्व में भेजा गया था। लेकिन सही मुस्लिम और अबू दाऊद से पता चलता है कि रसूलुल्लाह स. ने हज़रत अबू बकर रज़ी. को इस अभियान का अमीर नियुक्त फ़रमाया था। इस सिर्ये में मुसलमानों का निशाना मौत ही मौत था, हज़रत सलमा बिन अकूअ रज़ी. बयान करते हैं कि मैंने उस दिन अपने हाथ से सात आदमियों का वध किया, एक रिवायत के अनुसार उन्होंने नौ आदमियों की हत्या की थी।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने तीन मृतकों का विस्तार पूर्वक सदवर्णन फ़रमाया, इनमे पहला वर्णन मुकर्रम तय्यब अहमद बंगाली का था, जो क़ादियान के दरवेश थे। आपने 11 दिसम्बर को 97 वर्ष की आयु में वफ़ात पाई, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। बंगला देश में इनका जन्म हुआ था। 1942 में आपको ढाका में यथावत रूप से बैअत फ़ार्म भर कर शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली। 1945 में पहली बार जलसा सालाना क़ादियान में शामिल हुए और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. से भेंट करने का सौभाग्य मिला। क़ादियान से इतना प्रेम हो गया कि फिर वापस अपने देश नहीं गए। आपने दो साल ग्रामीण मुबल्लिग़ की विशेष कक्षा में शिक्षा प्राप्त की, इसी बीच 1947 में देश विभाजन की घटना हुई और आपने क़ादियान में ही निवास करने की प्रार्थना की, जो कि स्वीकार हुई। दर्वेशी के ज़माने में इनको विभिन्न स्थानों पर सुरक्षा के लिए ड्यूटी देने

का अवसर मिला। सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान के विभिन्न दफ्तरों में इनको कई प्रकार की सेवाएँ करने का अवसर मिला। सदर अंजुमन अहमदिय्या क़ादियान ने यह घोषणा कराई कि जो दर्वेश कोई काम करके अपनी आय अर्जित कर सकते हैं, उन्हें अपना कोई व्यवसाय खोजना चाहिए क्यूँकि जमाअत अलाउंस नहीं दे सकती और उनका आर्थिक भार अभी उठाना सम्भव नहीं। इस निर्देश के आज्ञा पालन में इन्होंने दारुल मसीह के बाहर बाज़ार में एक चाए की दूकान खोल ली और प्रायः यह होता था कि मेहमानों और ग़रीब लोगों को बिना मूल्य के चाए पिलाया करते थे।

इनकी शादी केरला की एक तलाक़ ली हुई महिला से हुई थी, आमना साहिबा से इनकी एक बेटी पहले से थी। इस बेटी को इन्होंने पाला। कुछ समय पश्चात् इनके घुटनों में घोर पीड़ा हुई और चलना फिरना मुश्किल हो गया। डाक्टरों ने इनको आपरेशन का सुझाव दिया, इन्होंने इसको क़ुबूल नहीं किया, बल्कि दुआ की अति विनयता से, और बड़ी मग्नता एवं दर्द के साथ दुआ करते थे। एक रात, कहते हैं कि मैंने एक सपने में देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पधारे हैं और बहिश्ती मक़बरे की कुछ जड़ी बूटियाँ खिलाई हैं। इसके बाद धीरे धीरे घुटनों की पीड़ा, कहते हैं कि दूर हो गई और अपनी इच्छानुसार यह दोबारा यथावत रूप से नमाज़ में मस्जिद अक़सा और मस्जिद मुबारक में आना शुरू हो गए। ख़िलाफ़त से अत्यधिक स्नेह का सम्बन्ध था इनको। खेलों से रुचि थी, इस लिए नौजवानों को भी इनसे विशेष प्रेम था। इनका साहस बढ़ाते थे, खेल के मैदानों में आते जाते थे, इस दृष्टि से बच्चों का प्रशिक्षण भी हो जाता था।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के निर्देशानुसार देश विभाजन के समय तीन सौ तेरह दर्वेश क़ादियान में रुक गए। आप इन दर्वेशों में अन्तिम थे जिनका निधन हो गया। अब क़ादियान में कोई दरवेश नहीं रहा और क़ादियान का यह जलसा, पहला जलसा है जो किसी भी दरवेश के बिना हो रहा है, आज से शुरू हो रहा है। अब क़ादियान में रहने वाली नई नस्ल का काम है कि अपने इन क़ुर्बानी करने वाले बुजुर्गों के चलन को क़ायम रखते हुए वफ़ा और निष्ठा से क़ादियान में अपने जीवन व्यतीत करें, अल्लाह तआला इनको तौफ़ीक़ भी दे।

इसी तरह हुज़ूर पुर नूर ने मिर्ज़ा मुहम्मदुद्दीन नाज़ साहब (सदर सदर अन्जुमन अहमदिया रबवा, पाकिस्तान) और मुकर्रम अक्मूरात ख़ाकऍफ़ साहब (नैशनल सदरे जमाअत तुर्कमानिस्तान) का भी सदवर्णन फ़रमाकर तीनों मृतकों के जनाज़े की नमाज़ अदा करने की घोषणा फ़रमाई और मृतकों की मग़फ़िरत और दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131